तीसरी लहर से बच्चों को खतरा!

लैंसेट कोविड–19 कमिशन इंडिया टास्क फोर्स ने एक्सपर्ट्स ग्रुप की मदद से दोनों लहरों के दौरान अस्पतालों के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर कहा है कि भारत में बच्चों के संक्रमण की स्थिति कमोबेश वैसी ही रही है, जैसी दुनिया के अन्य हिस्सों में।

मनोज सिंह।।

चिकित्सा जगत की प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका लैंसेट की यह स्टडी रिपोर्ट बड़ी महत्वपूर्ण है कि भारत में कोरोना की तीसरी लहर से बच्चों के बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका का कोई ठोस वैज्ञानिक आधार नहीं है। लैंसेट कोविड–19 कमिशन इंडिया टास्क फोर्स ने एक्सपर्ट्स ग्रुप की मदद से दोनों लहरों के दौरान अस्पतालों के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर कहा है कि भारत में बच्चों के संक्रमण की स्थिति कमोबेश वैसी ही रही है, जैसी दुनिया के अन्य हिस्सों में। औसतन पांच लाख संक्रमित बच्चों में 500 को ही अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा, इनमें भी दो फीसदी की मौत हुई। मौत वाले इन मामलों में 40 फीसदी केस ऐसे थे. जिनमें बच्चे दूसरी गंभीर बीमारियों से भी ग्रस्त थे। इसलिए स्टडी ग्रुप की साफ राय है कि तीसरी लहर को बच्चों के लिए विशेष तौर पर खतरनाक मानने की कोई वजह नहीं है। दरअसल, दूसरी लहर ने देश में जिस तरह के भयावह हालात बना दिए थे, उसमें आम लोगों के बीच तरह–तरह की आशंकाएं पैदा होना स्वाभाविक था। इसी माहौल में कुछ एक्सपर्ट ग्रुप्स की तरफ से भी ऐसे बयान आए, जिनसे आशंकाओं को बल मिला।

तीसरी भयावह लहर आने और उनमें बच्चों के लिए खास खतरा होने की बात ऐसी थी, जिसकी किसी भी सूरत में अनदेखी नहीं की जा सकती थी। हालांकि ऐसी आशंका जताने के पीछे कोई गलत इरादा था, यह नहीं कहा जा सकता। चूंकि दूसरी लहर में अपेक्षाकृत युवा मरीजों की मौत का अनुपात अधिक देखने में आ रहा था, इसलिए कुछ विशेषज्ञों को ऐसा लगा कि संभव है तीसरी लहर में और कम उम्र के लोग इसकी चपेट में आएं। सरकारी तंत्र और आम लोगों को आगाह करने के इरादे से उन्होंने अपनी यह राय सार्वजनिक कर दी। मगर इतनी अहम लड़ाई में हर कदम फूंक–फूंक कर रखने की जरूरत होती है। इन बयानों के बाद जहां आम लोगों में भय और आशंका की भावना भरने लगी, वहीं हेल्थकेयर ढांचे में भी बच्चों के लिए विशेष व्यवस्था करने की तैयारियां शुरू हो गईं।

संसाधनों की सीमा को देखते हुए अगर अवैज्ञानिक सूचनाओं के आधार पर तैयारियां जारी रखी जाएं तो फिर ज्यादा जरूरी तैयारियां छूट जाने का खतरा रहता है। ऐसे में लैंसेट की यह रिपोर्ट जहां हमें अपने बच्चों के स्वास्थ्य के मोर्चे पर अनावश्यक आशंकाओं से मुक्त करती है, वहीं संसाधनों की संभावित बर्बादी भी रोक सकती है। सबसे बड़ी बात यह कि आम लोगों के अलावा एक्सपर्ट समूहों को भी सावधान करती है कि गंभीर अध्ययन, जांच–पड़ताल और ठोस सबूतों की रोशनी में कोई बात की जाए तभी उसका वैज्ञानिक महत्व है। और, वायरस से लड़ाई के बीच में किसी भी वजह से वैज्ञानिकता का साथ छोड़ना आत्मघाती हो सकता है।

एक उत्सव

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

प्रत्येक ऋतु में एक उत्सव है। उन त्योहार, पर्व या उत्सव को मनाने का महत्व अधिक है जिनकी उत्पत्ति स्थानीय परम्परा या संस्कृति से न होकर जिनका उल्लेख वैदिक धर्मग्रंथ, धर्मसूत्र, स्मृति, पुराण और आचार संहिता में मिलता है। चंद्र और सूर्य की संक्रांतियों अनुसार कुछ त्योहार मनाएं जाते हैं। 12 सूर्य संक्रांति होती हैं जिसमें चार प्रमुख है– मकर, मेष, तुला और कर्क। इन चार में मकर संक्रांति महत्वपूर्ण है। सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ, संक्रांति और कुंभ। पर्वों में रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गुरुपूर्णिमा, वसंत पंचमी, हनुमान जयंती, नवरात्री, शिवरात्री, होली, ओणम, दीपावली, गणेशचतुर्थी और रक्षाबंधन प्रमुख हैं। हालांकि सभी में मकर संक्रांति और कुंभ को सर्वोच्च माना गया है। कीर्ति या स्वार्थ के लिए जो देता है तो वह मध्यम और जो वेश्यागमनादि, भांड, भाटे, पंडे को देता वह निकृष्ट माना गया है।

संपादकीय

जाति पर जोर

टिकट के लिए कुछ छोटे–मोटे नेता पार्टी के बड़े नेताओं के पास इस तरह के मुद्दे लाते हैं। एक वह दौर था जब पार्टियों के बड़े नेता विधानमंडल दल की बैठक में विधायकों से बात करते थे। कार्यकर्ताओं से पूछते थे और तब मुद्दे तय करते थे। आज राजनीतिक दल सही मुद्दे नहीं तलाश पा रहे। अगर इनके नेता गांव का दौरा करते और जमीनी हकीकत को समझने की कोशिश करते तो उन्हें पता चलता कि अपराधी को जाति विशेष का नेता बताने से संबंधित जाति के लोग भी नाराज हैं। और दूसरी जातियों के लोग इस बात से खफा हैं कि कैसे अपराधी का महिमामंडन किया जा रहा है। लेकिन राजनीति में यह कोई नई बात नहीं और ना ही यह समस्या किसी एक दल तक सीमित है। नेता राष्ट्रीय महापुरुषों को जाति विशेष तक सीमित कर रहे हैं। डॉक्टर आंबेडकर जो संपूर्ण समाज के नेता हैं, राष्ट्र नायक हैं, संविधान के रचयिता हैं, उन्हें सिर्फ दलित नेता बताया जाता है। महाराणा प्रताप राष्ट्रीय नायक हैं, लेकिन कुछ स्वार्थी नेताओं ने उनकी पहचान क्षत्रिय राजा तक सीमित कर दी है। ऐसा ही सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ भी हुआ। उन्हें पटेलों का नेता बताया जा रहा है। ये सारी चीजें राजनीति के नाम पर हो रही हैं क्योंकि पार्टियां जातियों में जनाधार तलाश रही हैं।

आज का माहौल देखकर तो लगता है, जैसे सारा चुनाव ब्राह्मणों के ही कंधे पर आ खड़ा हुआ है और वही हार-जीत का निर्णय कर देंगे। सभी ब्राह्मणों को अपनी ओर करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाए हुए हैं।

दलों की नासमझी

बृजेश शुक्ला।।

गोंडा के विधायक थे फजलुर बारी। एक दिन बाबरी मस्जिदराम जन्मभूमि मुद्दे को लेकर राजनीतिक दलों की भूमिका से नाराज फजलुर बारी बोले, 'अब मुझे एक ही दल समझ में आ रहा है, वह है बीएसपी। वह खरी बात कर रही है, लेकिन एक बात का डर है।' मैंने पूछा, 'किस बात का डर?' उन्होंने कहा, 'कहीं ब्राह्मण इस पार्टी में भी घुसने का रास्ता ना तैयार कर लें।' 'ऐसा आपको क्यों लगता है?' चिंतित बारी बोले, 'जो मुगलों और अंग्रेजों के शासन में भी अपनी जगह बनाने में कामयाब रहे, हो सकता है कि वे बीएसपी में भी एक दिन प्रवेश पा लें।'

2006 में जब बीएसपी के सभा–सम्मेलनों में यह नारा गूंजने लगा कि ब्राह्मण शंख बजाएगा, हाथी बढ़ता जाएगा, तो मुझे बारी की कही बात याद आ गई। आज का माहौल देखकर तो लगता है, जैसे सारा चुनाव ब्राह्मणों के ही कंधे पर आ खड़ा हुआ है और वही हार–जीत का निर्णय कर देंगे। बीएसपी हो या समाजवादी पार्टी, सभी ब्राह्मणों को अपनी ओर करने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाए हुए हैं। कांग्रेस तो एक कदम और आगे बढ़ गई है। वह ऐसा ब्राह्मण चेहरा ढूंढ रही है, जिसे मुख्यमंत्री के रूप में पेश किया जा सके। पिछले 32 साल से कांग्रेस वह संजीवनी ढूंढने में लगी है, जो उसे

फिर से उत्तर प्रदेश में सत्ता में ले आए, लेकिन क्या ब्राह्मण उसे सत्ता में ला सकते हैं?

इस दौरान गंगा और गोमती में बहुत पानी बह चुका है। कांग्रेस का दलित और मुस्लिम वोट बैंक उसके हाथ से निकल चुका है। बीएसपी की भी बेचैनी कुछ ऐसी ही है। 2012 के बाद वह सत्ता में नहीं आ सकी है। उसे लगता है कि ब्राह्मण 2007 में उसे सत्ता में ले आए थे और वही फिर बेड़ा पार कर सकते हैं। इन सबके बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या वास्तव में ब्राह्मण उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार से नाराज है? दूसरा, क्या भगवान परशुराम की भक्ति और जयकारा ब्राह्मण वोट दिला पाने की गारंटी है? जमीनी धरातल की बात करें तो लगता है कि राजनीतिक दल सही मुद्दे नहीं तलाश पा रहे। वे जिन मुद्दों पर जोर लगा रहे हैं, उनसे उन्हें मनचाहा फल शायद ही मिले।

राजनीति अजब–गजब खेल खेलती है। अब परशुराम ऐसे नायक के रूप में उभर चुके हैं, जो ब्राह्मणों के देवता हैं। दो दशक पहले तक ऐसा नहीं था। इसलिए अब यह कैसे हो गया, यह तो राजनीति के देवता ही बता सकते हैं। चुनाव आते ही तमाम जातीय नेताओं को कुछ–न–कुछ काम मिल जाता है। इस बार भी सभी पार्टियों में ऐसे नेता सक्रिय हो गए हैं, जो अपने को विभिन्न जातियों का रहनुमा बता रहे हैं। इससे न बीजेपी बची है, ना कोई विपक्षी दल। विकास दुबे जैसे कुख्यात अपराधी को ब्राह्मणों के सम्मान से जोड़कर उसकी मुठभेड़ के नाम पर वोट मांगे जा रहे हैं। आखिर ब्राह्मण वोटर एसपी, बीएसपी, कांग्रेस के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों हो गया?

सवाल और भी कई हैं। यदि भगवान परशुराम का नाम ब्राह्मणों के लिए इतना ही महत्वपूर्ण है तो 2017 में बीजेपी सरकार ने आते ही परशुराम जयंती की छुट्टी रद्द क्यों कर दी थी? सच तो यह है कि 2019 लोकसभा चुनाव में ब्राह्मणों ने बीजेपी को ही वोट दिया। उत्तर भारत के गांवों में हर वर्ष धनुष यज्ञ मेले का आयोजन होता है।

सूडोकु नवताल-5407

मध्यम

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5406 का हल

8	5	3	9	1	7	2	6	4
9	1	6	2	8	4	3	7	5
7	4	2	5	3	6	8	1	9
3	7	1	6	9	2	4	5	8
6	8	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	6	1	6	3	7
4	3	8	7	5	9	8	1	2
1	6	7	3	2	8	5	4	9

अपना ब्लॉग

सर्वत्र राम ही आदर्श है

मोहन। ब्राह्मणों के नाम पर विकास दुबे जैसे अपराधी को भी सूरमा बताया जा रहा है। शायद लोग भूल रहे हैं कि विकास दुबे ने जिन लोगों की हत्याएं कीं, उनमें से 90 प्रतिशत ब्राह्मण ही थे। उसने जिस पुलिस क्षेत्राधिकारी को मारा, वह मिश्रा थे। विकास ने बीजेपी के वरिष्ठ नेता और मंत्री संतोष शुक्ला की थाने में हत्या की थी। इसलिए ब्राह्मणों में एक बड़ा वर्ग विकास दुबे के महिमामंडन से नाराज है। गांव हो या शहर, सर्वत्र राम ही आदर्श हैं, वही पूज्य हैं। जब परशुराम को मालूम होता है कि वह क्रोध में जिनसे शास्त्रार्थ कर रहे हैं, वास्तव में वह राम हैं तो वह दुखी होते हैं और उनसे क्षमा मांगते हुए स्वयं वन की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। भगवान राम शिव का धनुष तोड़ देते हैं और जब इसकी सूचना परशुराम जी को मिलती है तो वह क्रोधित होते हुए यज्ञशाला में आते हैं। उनका भगवान राम और लक्ष्मण से तीखा संवाद होता है। इस संवाद में जब लक्ष्मण भगवान परशुराम को खरी–खोटी सुनाते हैं तो जन समुदाय जयकारा लगाता है।